सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 10 ● अंक: 261 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, सोमवार, 28 अक्टूबर, 2024

मूल्य ₹ 3/-

अगर आप किसी की हेल्प कर रहे हैं और बदले में कुछ वापस चाह रहे हैं तो आप बिजनेस कर रहे हैं काइंडनेस नहीं।
-ब्रह्माकुमारी शिवानी

घरेलू जमीन पर यशस्वी ने एक... 7 | उपचुनाव : योगी, राहुल, अखिलेश या... 3 | निषाद की होर्डिंग ने एनडीए गठबंधन... 2

4PM एक बार फिर नम्बर वन, भरोसे ने बनाया चैंपियन

मीडिया के सभी फार्मेट में तेजी से आगे बढ़ रहा 4PM

» जिद सच की टैग लाइन के साथ लोगों का भरोसा जीतने में हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। 4पीएम एक बार फिर देश का नम्बर एक न्यूज चैनल बना है। दर्शकों के भरोसे और खबरों की विश्वसनीयता की परीक्षा की कसौटी पर खरा साबित होते हुए कामयाबी की शिखर पर एक बार फिर 4पीएम लहरा रहा है। 164.7 मिलियन व्यूज के सहारे 4पीएम देश का नम्बर एक चैनल बनने में कामयाब रहा। निश्चित तौर पर यहां तक का सफर संघर्षों भरा रहा। लाख चुनौतिया आयी और हमारी राह में पत्थर के साथ कांटे भी बिछाये गये। लेकिन चुनौतियों के आगे हमने हार नहीं मानी और डंटे रहे। जनता के हितों के सवाल पूछने में। हमने सरकार को सच का आइना दिखाने में कोताही नहीं की।

कई बार ऐसा लगा कि आगे का सफर मुश्किल है। लेकिन दर्शकों के प्यार और जुनून ने हमें उस सफर पर आगे बड़ने की हिम्मत प्रदान की। खबरों के उस दौर में जहां सच को रौदने में तनिक भी देर नहीं की जा रही थी। हम उस दौर में भी सच के साथ खड़े रहे और आगे के किसी भी दौर में सच के साथ आंख से आख मिलाकर खड़े रहेंगे। मेन स्ट्रीम मीडिया ने भले ही अपने दायित्त्वों का निर्वाहन ठीक प्रकार से न किया हो लेकिन 4पीएम हमेशा से हमेशा तक दायित्तवों का निवार्हन करता रहेगा। डाटा बिग्स की ताजा रिपोर्ट हमारी इस बात को साबित करने में काफी है कि हम पत्रकारिता धर्म में कभी भी पीछे नहीं हटे।

रच दिया इतिहास

इस महीने के डाटाविंग्स के आंकड़ो में 4पीएम ने इतिहास रच दिया। 16.4 करोड़ व्यूज के सहारे 4पीएम फिर नम्बर एक पर आ गया। देश में 4पीएम नम्बर एक पर बना हुआ है। इस बार इतिहास तब बना जब अपने प्रतिद्वंदी रहे नम्बर दो से नम्बर एक बीच में 6 करोड़ से ज्यादा व्यूज का अंतर आया।

अफवाहों को मुह तोड़ जवाब

साजिशन 4पीएम पर हमले किये गये हमे बदनाम करने की कोशिश की गयी। लेकिन इस बार के आंकड़ों ने सबको मुह तोड़ जवाब दिया और बता दिया कि 4पीएम के साथ लोगों का न सिर्फ विश्वास बना हुआ बल्कि और ज्यादा मजबूत हुआ है। कुछ लोगों ने साजिशन 4पीएम को अफवाह फैला कर नुकसान पहुंचाने की कोशिश की। लेकिन सच को आंच क्या। 4पीएम को मिले लगभग 17 करोड़ व्यूज ने उन लोगों के मुह पर तमाचा मार दिया जिन्होंने साजिश रची थी।

164.7

मिलियन व्यूज के साथ 4पीएम देश में सबसे ऊपर

Top Political Commentators on YouTu...
Excl. mainstream media. View count as of Oct 27 for September uploaded ...
databeings — Colors indicate political leaning

Rank	Channel	#Views (Million)	Views Share	Rank	Channel	#Views (Million)	Views Share
1	4PM	164.7	13%	16	Ulta Chasma uc	27.6	2%
2	DB live	102.8	8%	17	The Rajdharma	26.4	2%
3	Ajit Anjum	84.9	7%	18	The News	24.8	2%
4	Abhisar Sharma	79.9	6%	19	National Dastak	24.8	2%
5	NMF News	70.1	6%	20	Punya Prasun Bajpai	24.3	2%
6	Online News India	61.4	5%	21	Satya Hindi	24.0	2%
7	Ravish Kumar Official	61.0	5%	22	Apka Akhbar	23.3	2%
8	The Chanakya Dialogues Hindi	49.0	4%	23	All India News	21.3	2%
9	CAPITAL TV	44.0	4%	24	Unite India	20.6	2%
10	Dhruv Rathee	40.3	3%	25	Bharat Samachar	20.0	2%
11	Sakshi Joshi	36.4	3%	26	The Rajneeti	19.3	2%
12	Earth 24	36.1	3%	27	The Jaipur Dialogues	17.9	1%
13	The Newspaper	33.4	3%	28	Pyara Hindustan	17.4	1%
14	Deepak Sharma	30.8	2%	29	Article19India	16.7	1%
15	Kadak	28.7	2%	30	Global Bharat TV	16.5	1%
					Total	1248.6	100%

Note
1.We have significantly expanded our master list for channel tracking. Top 30 shown here.

प्रिंट में भी कामयाबी : 4पीएम संपादक संजय शर्मा

सिर्फ इलेक्ट्रानिक ही नहीं बल्कि प्रिंट मीडिया में भी 4पीएम का जलवा कायम है। लोग 4पीएम में छपी खबरों को बड़े चाव से पढ़ते हैं और फोन कर बधाई देते हैं। अक्सर या यूं कहूं कि ज्यादातर लोगों का यही कहना होता है कि जिन मुद्दों पर दूसरे मीडिया संस्थान आंख बंद कर आगे निकल जाते हैं 4पीएम उन मुद्दों को भी बड़ी बेबाकी से उठाता है।

कारवां बनता गया...

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर देश जुड़ता गया और कारवां बनता गया। जिस समय 4पीएम की नींव डाली गयी थी कोमोवेश जैसे हालत आज के है वैसे ही हालत उस वक्त के भी थे। बस दौर अलग था। मीडिया को वश में करने की कोशिश उस समय भी होती थी और आज भी हो रही है। हमें यह बताते हुए हर्ष है कि न हम उस समय डरे और न ही आज डर कर पत्रकारिता कर रहे हैं। 4पीएम का कारवां लगातार बढ़ रहा है। न सिर्फ 4पीएम नेशनल बल्कि क्षेत्रीया भाषाओं के 4पीएम के दूसरे संस्करण भी लोगों को भा रहे हैं और वह उन्हें पंसद कर रहे हैं।

आसमां में सुराख

कामयाबी की यह कहानी उस दौर में लिखी जा रही है जिस दौर में रसूख के बल पर सबको मैनेज करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन हमने चूंकि हमरी टैग लाइन ही ''जिद सच की'' है लिहाजा हम अपनी इस जिद के साथ डटे हैं और आगे भी डटे रहेंगे।

जिद...सच की

निषाद की होर्डिंग ने एनडीए गठबंधन में मचाई खलबली

बीजेपी के खेवनहार से... सहारा बनते रहे हैं कैबिनेट मिनिस्टर संजय निषाद!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बड़ा सवाल यही है कि आखिर कैबिनेट मिनिस्टर संजय निषाद इस तरह की होर्डिंग्स पूरे शहर में क्यों लगवा रहे हैं। खासकर पांच कालीदास मार्ग समेत उन महत्वपूर्ण रास्तों पर जहां से सीएम योगी और अन्य खास लोगों का गुजर होता है। आखिर क्या कारण है कि पहले मंत्री संजय निषाद ने खुद को खेवनहार बताया और अब सहारा बता रहे हैं।

उनकी होर्डिंग्स में कमल का फूल भी है, उनका और बीजेपी शीर्ष नेतृत्तव का फोटो भी है? यह होर्डिंग्स निषाद पार्टी के नेता बिजेंद्र कुमार त्रिपाठी द्वारा लगवायी गयी है।

राजनीतिक विशलेषक डीके त्रिपाठी कहते हैं कि दरअस्ल होर्डिंग्स की भाषा पालिटिक्ल लाइजनिंग जैसी लग रही है। 2027 का सहारा का मतलब ही यही है कि यदि वह सहारा बनने से इंकार कर देंगे तो क्या बीजेपी बेसहारा हो जाएगी। या फिर बीजेपी ने जो जीत ?हासिल की है वह निषाद पार्टी के बिना नहीं हासिल कर पाएगी। या फिर उन्हें यदि उपचुनाव में सीटें नहीं मिली है तो इसकी कमी 2027 के चुनाव में बीजेपी हाइकमान पूरी करे?

आरोपों से मुक्ति चाहते हैं निषाद प्रमुख संजय

गौतलब है कि निषाद पार्टी के भीतर भी मंत्री संजय निषाद के उपर भारी राजनीतिक दबाव है। दूसरे नेता लगातार इस बात को कह रहे हैं कि अभी तक सिर्फ संजय निषाद ने अपना या फिर बेटे का भला किया है। दूसरे अन्य निषाद नेताओं को राजनीतिक भगीदारी नहीं मिली है। संजय निषाद एक सीट पर पार्टी के दूसरे नेता को चुनाव लड़ाकर इस तरह के अरोपो से मुक्ति पाना चाहते हैं।

लड़ाई कांटे की और आमने सामने की होगी

यूपी की पूरी राजनीति पिछड़े वोटों के इर्द-गिर्द घूम रही है। थोड़े से वोट भी इधर से उधर होंगे तो सीटो पर जीत हार का मार्जिन घट और बढ़ जाएगा। अंदर की खबरों की माने तो पहले संजय निषाद की पार्टी को एक सीट दी जा रही थी। लेकिन कांग्रेस-सपा के बीच तय हुए नये फार्मूले ने संजय निषाद के अरमानों पर पानी फेर दिया और एनडीए गठबंधन के नये फार्मूले के तहत सभी सीटो पर बीजेपी ने अपने प्रत्याशी उतारने का फैसला लिया। यानि कि लड़ाई कांटे की और आमने सामने की होगी।

सरकार प्रमुखों से मिलने का मतलब डील नहीं : सीजेआई

» न्यायपालिका पूरी तरह अपनी स्वतंत्रता के साथ काम करती है : चंद्रचूड़

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस जब भी सरकार के प्रमुखों से मिलते हैं तो इसका मतलब कोई डील होना नहीं होता। इस तरह की मुलाकातें अक्सर प्रशासनिक मामलों से जुड़ी होती हैं। न्यायपालिका पूरी तरह अपनी स्वतंत्रता के साथ काम करती है।

मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की यह टिप्पणी गणेश उत्सव के दौरान उनके आवास पर पीएम मोदी के पहुंचने के बाद शुरू हुए विवाद को लेकर आई है। पीएम मोदी और मुख्य न्यायाधीश के बीच हुई उनके आवास पर हुई मुलाकात को लेकर कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों ने आलोचना की थी।

मुंबई विश्वविद्यालय में एक लेक्चर सीरीज को संबोधित करते हुए सीजेआई ने शनिवार को एक कार्यक्रम में कहा कि मुख्य न्यायाधीशों की राज्य या केंद्र सरकार के प्रमुखों से होने वाली मुलाकातों के दौरान कभी विचाराधीन मुकदमों पर कोई बात नहीं होती। कुछ काम ऐसे होते हैं जो न्यायपालिका और सरकार दोनों से जुड़े होते हैं। ये प्रशासनिक मामले होते हैं। उदाहरण के तौर पर उन्होंने बताया कि ऐसी मुलाकातें जरूरी होती हैं क्योंकि राज्य सरकारें न्यायपालिका के बजट जारी करती हैं।

सीजेआई ने कहा, ये बजट न्यायाधीशों के लिए नहीं होता। अगर हम नहीं मिलेंगे और सिर्फ पत्राचार पर निर्भर रहेंगे तो कैसे चलेगा। राजनीतिक व्यवस्था में इन सब मामलों में पूरी परिपक्वता अपनाई जाती है। उन्होंने कहा, मेरा ऐसा कोई अनुभव नहीं रहा है, जब किसी मुख्यमंत्री ने किसी विचाराधीन मुकदमे पर कोई बात की हो।

सीजेआई ने कहा कि, प्रशासनिक पक्ष पर न्यायपालिका और सरकार के कार्यों के बीच एक अंतर है। यह एक परंपरा है कि मुख्यमंत्री या मुख्य न्यायाधीश त्योहारों या शोक के अवसर पर एक-दूसरे से मिलते हैं, लेकिन निश्चित रूप से हमें यह समझने की परिपक्वता होनी चाहिए कि इसका हमारे न्यायिक कार्यों पर कोई असर नहीं पड़ता है। कॉलेजियम प्रणाली में सुधार संभव, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसमें कोई खामी है।

तेजस्वी सूर्या के वक्फ बोर्ड पर दावे से गरमाई सियासत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बंगलूरू। भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या के वक्फ को लेकर किए गए दावे से कर्नाटक की राजनीति गरमा गई है। दरअसल तेजस्वी सूर्या ने कहा है कि वक्फ बोर्ड ने कर्नाटक में किसानों की 1500 एकड़ जमीन पर दावा किया है। भाजपा सांसद के इस दावे को लेकर कांग्रेस ने हमला बोला है और कहा है कि भाजपा सांसद डर का माहौल बनाना चाहते हैं।

भाजपा सांसद के आरोपों पर कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के मंत्री दिनेश गुंडु राव ने कहा कि तेजस्वी सूर्या हमेशा डर फैलाते हैं। वे डर का माहौल बनाकर उसका फायदा उठाते हैं। जब वन भूमि, वक्फ भूमि की बात आती है तो दस्तावेजों के आधार पर नोटिस जारी किए जाते हैं। सरकार किसी की जमीन नहीं छीन रही है और इसका सवाल ही नहीं है। अगर जमीन किसानों की है तो ये उन्हें मिलेगी और अगर वक्फ की जमीन है तो ये वक्फ को मिलेगी। किसी के अधिकार का हनन नहीं होगा। मुझे यकीन है कि इस मामले में न्याय होगा। हमारे लिए किसानों का हित सर्वोपरि है। हम ही हैं, जिन्होंने जमीन सुधार किए थे।

तेजस्वी सूर्या के दावे पर कर्नाटक सरकार के मंत्री एमबी पाटिल ने कहा कि मैंने जिलाधिकारी को जांच करने का निर्देश दिया है। मैं खुद किसानों से बात करूंगा और अगर जमीन किसानों की है तो एक इंच जमीन भी उनसे नहीं ली जाएगी। वक्फ संपत्ति की भी सुरक्षा की जाएगी। जिले का प्रभारी होने के नाते किसी के साथ भी अन्याय नहीं होगा। बता दें कि एमबी पाटिल विजयपुरा जिले के प्रभारी हैं और तेजस्वी सूर्या ने विजयपुरा के किसानों की जमीन पर वक्फ बोर्ड के दावा जताने का आरोप लगाया है।

राजनीति सिने क्षेत्र नहीं युद्ध क्षेत्र है : दलपति

» सिने अभिनेता ने कहा, हमें राजनीतिक मैदान पर रहना होगा सावधान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। मशहूर अभिनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेट्री कड़गम (टीवीके) का पहला सम्मेलन तमिलनाडु के विल्लुपुरम जिले के विक्रवंडी वी सलाई गांव में हुआ। इसमें पार्टी के प्रमुख और अभिनेता दलपति विजय ने राजनीतिक क्षेत्र में कदम रखने को लेकर अपने विचार साझा किए। इस दौरान उन्होंने तमिलनाडु सरकार पर भी निशाना साधा। दलपति विजय ने कहा कि राजनीति कोई सिने क्षेत्र नहीं बल्कि एक युद्धक्षेत्र है। यह गंभीर होगा।

अगर हम गंभीरता और थोड़ी हंसी के साथ इसे हाथ में लेने का फैसला करते हैं तो ही हम इस क्षेत्र में टिके रह सकते हैं और विरोधियों से निपट सकते हैं। हमें मैदान पर सावधान रहना होगा।

जनविरोधी है राज्य सरकार

टीवीके प्रमुख ने कहा कि तमिलनाडु में एक समूह एक ही गाना गा रहा है। यहां जो भी राजनीति के लिए आता है उसे विशिष्ट रंग दे रहा है और लोगों को धोखा दे रहा है। द्रविड़ियन मॉडल के नाम पर वे भूमिगत सौदेबाजी कर रहे हैं और लोगों को धोखा दे रहे हैं। यहां जनविरोधी सरकार है।

दलपति विजय ने कहा कि हम द्रविड़ राष्ट्रवाद और तमिल राष्ट्रवाद को अलग नहीं करने जा रहे हैं। वे इस मिट्टी की दो आंखें हैं। हमें खुद को किसी विशिष्ट पहचान तक सीमित नहीं रखना है। हमारी विचारधारा धर्मनिरपेक्ष, सामाजिक न्याय की है। हम उसके आधार पर कार्य करने जा रहे हैं। राजनीति में असफलताओं और सफल कहानियों को पढ़ने के बाद मैं अपने करियर को शिखर पर छोड़कर आप सभी पर भरोसा करते हुए आपका विजय बनकर आया हूं।

2026 में विधानसभा चुनाव लड़ने की है तैयारी

मशहूर अभिनेता विजय का राजनीतिक दल तमिलनाडु में 2026 में होने वाले विधानसभा चुनाव में किस्मत आजमाने को तैयार है। गौरतलब है कि अभिनेता विजय ने राजनीति में प्रवेश करने के बाद इस साल फरवरी में अपनी पार्टी तमिलगा वेत्री कड़गम (टीवीके) के नाम की घोषणा की। हाल ही में उन्होंने इसका झंडा और चुनाव चिह्न जारी किया था। तब उन्होंने बताया था कि भारत के चुनाव आयोग ने आधिकारिक तौर पर तमिलगा वेत्री कड़गम को एक राजनीतिक पार्टी के रूप में पंजीकृत कर लिया है। इसके साथ ही चुनाव आयोग ने उनकी पार्टी को एक पंजीकृत सियासी दल के रूप में चुनावी राजनीति में भाग लेने की अनुमति दे दी है। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव 2026 में होने की उम्मीद है।

कांग्रेस का प्रदेश में कोई अस्तित्व नहीं : चौधरी

» प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा- सपा भी छोड़ चुकी है कांग्रेस का साथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में बीजेपी अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने रविवार को प्रधानमंत्री के मन की बात का रेडियो प्रसारण सुना। उन्होंने बताया कि आज के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने वोकल फॉर लोकल की बात की। उन्होंने डिजिटल अरेस्ट पर बात की। लोगों को सावधान और जागरूक रहने की अपील की।

भूपेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने इस बारे में भी बात की है कि आज कैसे दुनिया भारत की कला और संस्कृति को स्वीकार कर रही है। प्रधानमंत्री ने साइबर फ्रॉड और डिजिटल गिरफ्तारी के बारे में भी बात की।

यूपी की नौ सीटों पर होने वाली उपचुनावों पर कहा कि हम चुनाव के लिए पूरी तरह तैयार हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में हम सभी सीटें जीतेंगे। यूपी में कांग्रेस का कोई अस्तित्व नहीं है। यहां तक कि साइकिल (समाजवादी पार्टी) भी उनका साथ छोड़ चुकी है।

उपचुनाव : योगी, राहुल, अखिलेश या मायावती सबकी प्रतिष्ठा दांव पर

» जीतने के लिए सबने अपनी पूरी ताकत झोंकी

» उपचुनाव को विधानसभा के सेमीफाइनल की तरह देखा जा रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। ज्यादातर मामलों में उपचुनाव बहुत कम ही गंभीरता से लिए जाते हैं। यह सत्ताधारी पार्टी का एकतरफा खेल माना जाता है। लेकिन यूपी उप चुनाव को लेकर इस बार राजनीतिक दलों में जो सक्रियता दिखाई दे रही है, उसे देखकर लगता है कि यह उप चुनाव अपने आप में विशेष है। इस उपचुनाव में योगी आदित्यनाथ, राहुल गांधी, अखिलेश यादव और मायावती सबकी प्रतिष्ठा दांव पर है। 2027 का यूपी विधानसभा चुनाव अभी दूर है, लेकिन अभी से इस उपचुनाव को विधानसभा के सेमीफाइनल की तरह देखा जा रहा है।

यही कारण है कि इसे जीतने के लिए सबने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। लोकसभा चुनाव 2024 में भाजपा की यूपी में सीटें कम हो गई, लेकिन इसका ठीकरा योगी आदित्यनाथ के सिर नहीं फोड़ा जा सका। इसका सीधा कारण था कि उपचुनाव में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने पूरी तरह अपने हिसाब से कैंडिडेट उतारे। अपने हिसाब से रणनीति बनाई। ऐसे में परिणाम की जिम्मेदारी भी केंद्रीय नेतृत्व पर आई। लेकिन इस उपचुनाव में पूरा दारोमदार योगी आदित्यनाथ के हाथों में है। उम्मीदवारों के चयन से लेकर चुनाव प्रचार की आक्रामक रणनीति हर जगह पूरी तरह उनकी चल रही है। ऐसे में उपचुनाव में जीत से इतर वे कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकते। इस उपचुनाव के परिणाम को सीधे योगी आदित्यनाथ की यूपी और प्रदेश भाजपा संगठन पर पकड़ के तौर पर देखा जाएगा। 2027 के विधानसभा चुनाव के पहले वे इस उपचुनाव में मजबूत दावेदारी पेश करना चाहेंगे।

अखिलेश यादव या राहुल गांधी

लोकसभा चुनाव 2024 में सपा-कांग्रेस गठबंधन को बड़ी जीत मिली। लेकिन इस जीत का नायक कौन था, इसको लेकर कांग्रेस-सपा दोनों में मतभेद है। कांग्रेस को लगता है कि यह विजय राहुल गांधी के द्वारा संविधान और आरक्षण का मुद्दा पुरजोर तरीके से उठाए जाने के कारण मिली, वहीं सपा का कहना है कि अखिलेश यादव ने पीडीए का मुद्दा जिस तरह पुरजोर तरीके से उठाया, उसके कारण गठबंधन को जीत मिली। उपचुनाव में सीटों पर जिस तरह की लड़ाई दोनों दलों में देखने को मिली, उसकी जड़ में यह भ्रम ही है। सपा जीत में अपनी भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण देखते हुए ज्यादा सीटों पर लड़ना चाहती थी, जबकि कांग्रेस अपने लिए ज्यादा सीटों पर दावेदारी ठोंक रही थी।

> कांग्रेस को लगता है कि यह विजय राहुल गांधी के द्वारा संविधान और आरक्षण का उठाए जाने के कारण मिली, वहीं सपा का कहना है कि अखिलेश यादव ने पीडीए का मुद्दा पुरजोर तरीके से उठाया, उसके कारण गठबंधन को जीत मिली

कांग्रेस ने सपा के लिए साफ किया रास्ता

अब कांग्रेस ने सपा के लिए मैदान खुला छोड़ दिया है। राहुल गांधी ने भी यूपी के रण में न उतरकर सपा के लिए रास्ता साफ कर दिया। लोकसभा चुनाव में सपा जहां 37 सीटों के साथ यूपी की सबसे बड़ी पार्टी बनी, वहीं कांग्रेस भी एक से बढ़कर छह सीट पर पहुंच गई। अब यदि इस उपचुनाव में सपा ज्यादा सीटें जीतने में सफल हो जाती है तो अखिलेश यादव इसे अपने पीडीए फॉर्मूले की जीत बता सकेंगे। लेकिन यदि सपा

सफल नहीं होती है तो कांग्रेस यह बताने से नहीं चूकेगी कि लोकसभा चुनाव की सफलता राहुल गांधी की जीत थी। कांग्रेस बता सकेगी कि राहुल गांधी के कारण दलित-मुसलमान समाजवादी पार्टी के साथ खड़ा हुआ, जबकि उपचुनाव में ऐसा नहीं होने के कारण सपा की हार हुई। यानी 2027 के यूपी विधानसभा चुनाव में किसकी दावेदारी कितनी मजबूत होने वाली है, यह बहुत कुछ इस उप चुनाव से तय होने वाला है।

इस बार कुछ बेहतर कर दिखाने की कोशिश में मायावती

पिछले कुछ चुनावों में बहुजन समाज पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा है। 2014, 2019 और 2014 के लोकसभा चुनावों और 2012, 2017 और 2022 के यूपी विधानसभा चुनावों में पार्टी बहुत कुछ नहीं कर पाई है। गैर जाटव वोट बैंक उससे पहले ही छिटक रहा था, अब उसका कोर जाटव वोट बैंक भी खिसकता दिख रहा है। भाजपा के खिलाफ लड़ने के मामले में मुसलमानों के मन में मायावती की प्रतिबद्धता को लेकर संदेह पैदा हुआ है। उन्हें इसका भी नुकसान हुआ है। अब इस उपचुनाव में वे अपने लिए कुछ बेहतर कर यह दिखाने की कोशिश कर सकती हैं कि उनकी धार अभी कमजोर नहीं हुई है। फिलहाल इन बड़े दिग्गजों की किस्मत पर यूपी की जनता क्या फैसला सुनाएगी, किसकी इज्जत बचेगी और किसकी मिट्टी पलीद होगी, यह तभी पता चलेगा जब इन उप चुनावों के परिणाम सामने आएंगे।

गाजियाबाद सीट पर सपा का फैजाबाद फॉर्मूला

सपा ने लोकसभा चुनाव में अयोध्या जिले की फैजाबाद लोकसभा सीट पर दलित नेता को उम्मीदवार बनाया था। फैजाबाद सीट सामान्य थी। पार्टी ने विधानसभा उपचुनाव में भी यही प्रयोग गाजियाबाद सदर विधानसभा सीट पर दोहराया है। गाजियाबाद सामान्य सीट है और सपा ने यहां से सिंह राज जाटव को टिकट दिया है। ऐसा पहली बार है जब पार्टी ने इस सामान्य सीट पर दलित चेहरे को उतारा है। फैजाबाद में सामान्य सीट पर दलित कार्ड का फॉर्मूला हिट रहा और पार्टी प्रतिष्ठापरक सीट जीतने में सफल रही थी। गाजियाबाद भी बीजेपी का गढ़ माना जाता है। इस बार ये फॉर्मूला हिट होता है या फेल, ये चुनाव नतीजे ही बताएंगे। सपा ने उपचुनाव में पीडीए के फॉर्मूले पर टिकट बांटे हैं। पार्टी ने अलीगढ़ जिले की खैर (सुरक्षित) सीट से डॉक्टर चारु केन और गाजियाबाद से सिंह राज जाटव के रूप में दो दलित चेहरों पर दांव लगाया है तो चार मुस्लिम और तीन पिछड़े चेहरों को भी चुनाव मैदान में उतारा है। सपा के मुस्लिम उम्मीदवारों की बात करें तो कुंदरकी से मोहम्मद रिजवान, सीसामऊ से नसीम सोलंकी, फूलपुर से मुस्तफा सिद्दीकी और मीरापुर से सुम्बुल राणा को टिकट दिया है। अखिलेश यादव की पार्टी ने करहल से तेज प्रताप यादव, कटेहरी सीट से शोभावती वर्मा और मझवां सीट से ज्योति बिंद के रूप में ओबीसी चेहरों को उतारा है।

> ऐसा दूसरी बार है जब पार्टी ने सामान्य सीट पर दलित चेहरे को उतारा है। फैजाबाद में सामान्य सीट पर दलित कार्ड का फॉर्मूला हिट रहा और पार्टी प्रतिष्ठापरक सीट जीतने में सफल रही थी।

कैडर और ओबीसी के फॉर्मूले पर लौटी बीजेपी

लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने दूसरे दलों से आए नेताओं को दिल खोलकर टिकट दिए थे। पार्टी के खराब प्रदर्शन के पीछे इसे भी एक वजह बतायी जा रहा थी। बीजेपी ने उपचुनाव में इस गलती को सुधारते हुए कैडर पर फोकस किया है। बीजेपी यूपी की नौ में से आठ सीटों पर उपचुनाव लड़ रही है और एक सीट सहयोगी आरएलडी के लिए छोड़ी है। बीजेपी ने जिन आठ उम्मीदवारों का ऐलान किया है, उनमें से चार पर पार्टी के पुराने कैडर को तवज्जो दी गई है। पार्टी ने 17 साल पहले सपा छोड़कर आए संजीव शर्मा को भी इनाम दिया है। करहल सीट से बीजेपी उम्मीदवार अनुजेश यादव पहले सपा में थे। कटेहरी से उम्मीदवार धर्मराज निषाद मायावती की सरकार में मंत्री रहे हैं। वे बसपा छोड़कर सपा में आए हैं। वहीं, फूलपुर से उम्मीदवार दीपक पटेल भी बसपा के टिकट पर चुनाव जीतकर विधानसभा में करछना सीट का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। कुल चार उम्मीदवार दूसरी पार्टियों से बीजेपी में आए हैं जबकि चार संगठन के पुराने समर्पित नेताओं को भी टिकट देकर पार्टी ने कैडर और बाहरी को बैलेंस किया है। मझवां से उम्मीदवार सुचिस्मिता मौर्य का टिकट पार्टी ने 2022 में काट दिया था।

> जातीय समीकरणों की बात करें तो बीजेपी उम्मीदवारों की लिस्ट में सबसे ज्यादा ओबीसी को टिकट दिया गया है। ओबीसी वर्ग से चार नेता बीजेपी का टिकट पाने में सफल रहे तो वहीं ब्राह्मण वर्ग से भी दो उम्मीदवार हैं। वहीं खैर सुरक्षित सीट से सुरेंद्र दिलेर के रूप में पार्टी ने दलित चेहरे पर दांव लगाया है। टिकट बंटवारे में कैडर को बैलेंस करने की कोशिश के साथ ही बीजेपी का ओबीसी फोकस भी साफ नजर आता है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

बम की अफवाहों से दुनिया हलकान

वो एक कहावत है न, सावन के अंधे को सब हरा ही हरा दिखाई देता है। खैर अभी हाल फिलहाल की अगर बात की जाये तो इन दिनों हरा तो नहीं दिखिए दे रहा। क्योंकि सावन तो अभी बहुत दूर है। लेकिन अभी मौजूदा हालात की बात की जाये तो इन दिनों बम ही बम सुनाई दे रहा है। आज कल अलावा बम ही बम सुनाई भी देता है- माने बम भोले। लेकिन यह सावन का महीना नहीं है। फिर भी बम ही बम हैं। हकीकत में भी हैं, अफवाहों में भी हैं। हकीकत में यूक्रेन में बरस रहे हैं, गाजा में और लेबनान में बरस रहे हैं। कोई रोकने वाला नहीं है। भाजपा वाले कहते हैं कि मोदी जी ने यूक्रेन-रूस युद्ध रुकवा दिया था। लेकिन वह अपने छात्रों को निकलवाने के लिए रुकवाया था। वरना जी, न रूस किसी की सुनता है, न यूक्रेन। रूस से कोई कहता भी नहीं, क्योंकि उन्हें लगता है कि पुतिन जैसे आदमी से क्या कहें। उन्हें कहने का अर्थ होगा, अपने को छोटा करना। यूक्रेन छोटा है, लाड़ला भी। पर दिक्कत यह कि लाड़ला कब बिगड़ जाएगा, क्या पता चलता है।

युद्धविराम के प्रस्ताव होते रहते हैं और वह बम गिराता रहता है। वह तो अपने यहां संयुक्त राष्ट्र महासचिव को घुसने तक नहीं देता। अब सब बातों का की बात में कितनी सच्चाई है ये तो खुदा ही जाने। खैर यह तो हुई बम की हकीकत। लेकिन इधर बम की अफवाहें भी खूब चल रही हैं। नहीं-नहीं, दंगों-वंगों वाले नहीं और वैसे भी दंगों-वंगों में तो चाकू-छुरे और तलवारें ही काफी होते हैं। फिर दंगों के बाद बुलडोजर चलते हैं। लेकिन यह अफवाहें दंगों की नहीं हैं, जैसा कि अक्सर माना जाता है कि अगर बिना अफवाहों के दंगे हुए तो क्या हुए। बम की अफवाहें तो हवाई उड़ानों के लिए फैल रही हैं। फैलती ही जा रही हैं। पहले हवाई उड़ानों के लिए बम की एक-आध अफवाह होती थी, लेकिन अब तो सैंकड़ों होने लगी हैं। मानने को इसे तरक्की भी माना जा सकता है। लेकिन ऐसी तरक्की को तरक्की कौन मानता है साहब। लोग तो असली तरक्की को तरक्की नहीं मानते। उधर हकीकत में बरसने वाले बमों से दुनिया तंग आई हुई है और इधर बम की अफवाहों से दुनिया हलकान है। सचमुच अफवाहों का अपच हो गया है। दिन की कोई एक-आध अफवाह हो तो दुनिया उसे पचा भी ले। लेकिन यहां तो इफरात में अफवाहें हैं। कैसे पचें। दुनिया इतनी हलकान हो चुकी है कि इन अफवाहों को लेकर कुछ पक्का इंतजाम करने की मांग करने लगी है। वैसे हो जाए तो अच्छा ही है। पर सिर्फ उड़ानों के लिए अफवाहों पर रोक क्यों लगे। सभी अफवाहों पर क्यों नहीं? अफवाहों का आलम ये है कि मानों जो न हुआ हो वो भी बना दिया जाता है।

“ आज कल अलावा बम ही बम सुनाई भी देता है- माने बम भोले। लेकिन यह सावन का महीना नहीं है। फिर भी बम ही बम हैं। हकीकत में भी हैं, अफवाहों में भी हैं। हकीकत में यूक्रेन में बरस रहे हैं, गाजा में और लेबनान में बरस रहे हैं। कोई रोकने वाला नहीं है। भाजपा वाले कहते हैं कि मोदी जी ने यूक्रेन-रूस युद्ध रुकवा दिया था। लेकिन वह अपने छात्रों को निकलवाने के लिए रुकवाया था।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

खामोशी से सुधरे भारत-अरब देशों के रिश्ते

जी. पार्थसारथी

भारत के प्रमुख अरब देशों के साथ संबंध हमेशा से मजबूत रहे हैं। पिछले दशक में, और भी प्रगाढ़ और बहुआयामी हो गए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और अन्य पश्चिमी देशों के साथ भारत के व्यापारिक और आर्थिक संबंधों पर काफी ध्यान दिया जाता है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन जिस ओर उतना ध्यान नहीं दिया जाता, पर दिया जाना चाहिए, वह है खाड़ी क्षेत्र के देशों के साथ भारत के बढ़ते रिश्ते। भारत के पास पहले से ही 'पड़ोसी पहले' नीति है, लेकिन 'पड़ोसी' मुल्क की परिभाषा क्या हो, इस पर अभी भी अनिश्चितता और यहां तक कि विवाद भी है। कुछ लोग अक्सर इसकी विवेचना खैबर दर्रा और बंगाल की खाड़ी के बीच के क्षेत्र के रूप में करके संतुष्ट हो जाते हैं! अब समय आ गया है कि अरब सागर और फारस की खाड़ी के पार छह अरब देशों- संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), सऊदी अरब, ओमान, कुवैत, कतर और बहरीन- को भारत के विस्तृत पड़ोस के हिस्से के रूप में शामिल किया जाए।

यह छहों अरब देश खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के माध्यम से राजनीतिक, कूटनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह 1981 में गठित जीसीसी क्षेत्रीय निकाय है, जिसका मकसद अपने छह सदस्य देशों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य सहयोग को बढ़ावा देना है। जीजीसी मुल्कों के साथ भारत के मजबूत संबंध सदियों से रहे हैं जिनका स्वरूप भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक व्यापार संबंध, ऊर्जा सुरक्षा और एक बड़े भारतीय प्रवासी समुदाय की उपस्थिति से बनता है। लगभग 89 लाख से अधिक भारतीय जीसीसी देशों में रहते और काम करते हैं, जो इसको इस इलाके में सबसे बड़े प्रवासी समूहों में एक बनाता है। सबसे अधिक संख्या में भारतीय नागरिक संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में रहते हैं, जिनकी कुल संख्या 35 लाख है। सऊदी अरब में 26 लाख और कुवैत 11 लाख से अधिक भारतीय नागरिकों के साथ तीसरे स्थान पर है।

अन्य जीसीसी देशों में ओमान (7,79,000), कतर (7,45,000) और बहरीन (3,23,000) शामिल हैं। यह विशाल और संपन्न प्रवासी आबादी भारत के लिए विदेशी मुद्रा पाने का एक प्रमुख स्रोत है। वित्त वर्ष 2023-24 में, भारत को कुल मिलाकर 123 बिलियन डॉलर मुद्रा प्राप्त हुई थी, जिसमें खाड़ी के अरब देशों का हिस्सा काफी बड़ा रहा। विशेष रूप से, अकेले यूएई से भारत को सकल

विदेशी मुद्रा का 18 फीसदी प्राप्त हुआ, जिससे यह देश संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद विदेशी मुद्रा पाने का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत बना। भारत की कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस की ज़रूरतों का बहुत बड़ा अंश खाड़ी मुल्कों से आता है, जीसीसी भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक है (यहां तक कि यूरोपीय संघ से भी बड़ा) और हमारी ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। छह अरब खाड़ी देशों के भारी महत्व को देखते हुए, भारत को आने वाले वर्षों में जीसीसी के सभी सदस्यों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाना होगा, जिसमें यूएई और सऊदी अरब पर विशेष ध्यान दिया जाए। अरब की खाड़ी के देशों का सदियों से भारत के पश्चिमी तटों पर स्थित बंदरगाह, विशेष रूप से केरल के साथ, दोतरफा व्यापार संबंध रहा है। संयोगवश, अब भी संकेत मिल रहे हैं कि यूएई और सऊदी अरब बड़ी संख्या में भारतीय कामगारों के वास्ते नई आवास सुविधाओं की व्यवस्था करने की प्रक्रिया में हैं, जिनके वहां काम करने के लिए पंहुचने की आशा है। जीजीसी मुल्कों के साथ भारत संयुक्त अभ्यास और सुरक्षा वार्ता के माध्यम से भी अपने सैन्य संबंध बढ़ा रहा है। वैसे, खाड़ी देशों की प्रवृत्ति पश्चिमी शक्तियों पर भरोसा करने की रही है। उल्लेखनीय है, कतर और फारस की खाड़ी क्षेत्र के अन्य अरबी देशों ने अमेरिकी सेना को भूमि और अन्य सुविधाएं प्रदान कर रखी हैं। बहरीन के मनामा में अमेरिका के पांचवें बेड़े का केंद्रीय कमान मुख्यालय है, साथ ही रॉयल ऑस्ट्रेलियाई नौसेना भी समुद्री सुरक्षा प्रदान कर रही है। भारत भी अरब की खाड़ी क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने में भूमिका निभा सकता है। भारतीय नौसेना के पास कई तरह के जहाज हैं जिन्हें वह इस उद्देश्य के लिए तैनात कर सकता है।

भारत के पास अब 2 विमानवाहक पोत, 8 टैंक लैंडिंग जहाज, 11 विध्वंसक और 12 फ्रिगेट हैं, इसके अलावा 16 हमलावर पनडुब्बियां हैं जिनका वह ज़रूरत पड़ने पर इस्तेमाल कर सकता है। लाल सागर में समुद्री जहाज़ों पर हुत्थी लड़ाकों द्वारा बढ़ते हमलों के बाद, भारतीय नौसेना ने अरब सागर और लाल सागर के पूर्वी इलाकों में कम से कम एक दर्जन युद्धपोत तैनात किए हैं, जो इस क्षेत्र में उसकी सबसे बड़ी तैनाती है। इसके अलावा, भारत ने अब दो परमाणु पनडुब्बियां (आईएनएस अरिहंत और आईएनएस अरिघात) का निर्माण और कमीशन भी किया है, जिन्हें ज़रूरत पड़ने और अनुरोध करने पर इस क्षेत्र में मित्र देशों की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए तैनात किया जा सकता है।

गंभीर रोगों के इलाज में मददगार शोध को सम्मान

डॉ. शशांक द्विवेदी

माइक्रो आरएनए की खोज और ट्रांसक्रिप्शन के बाद जीन एक्प्रेशन को रेगुलेट करने में उनकी भूमिका के लिए अमेरिका के दो विज्ञानियों विक्टर एंब्रोस और गैरी रुवकुन को संयुक्त रूप से साल 2024 का चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार मिलेगा। नोबेल असेंबली ने कहा कि उनकी खोज जीवों के विकास और कार्य करने के तरीके के लिए मौलिक रूप से महत्वपूर्ण साबित हो रही है। माइक्रो आरएनए जेनेटिक मैटेरियल आरएनए का सूक्ष्म हिस्सा होता है जो कोशिका के स्तर पर जीन की कार्यप्रणाली को बदलने देता है। माइक्रो आरएनए की जीन की गतिविधि को नियंत्रित करने और जीवों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दोनों विज्ञानियों की खोज ने जीन को नियंत्रित करने के नए सिद्धांत के बारे में बताया है। उनके शोध से यह समझने में मदद मिली कि शरीर में कोशिकाएं कैसे काम करती हैं। एंब्रोस ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में माइक्रो आरएनए को लेकर शोध किया।

वह यूनिवर्सिटी आफ मैसाचुसेट्स मेडिकल स्कूल में नेचुरल साइंस के प्रोफेसर हैं, जबकि रुवकुन ने यह शोध मैसाचुसेट्स जनरल हास्पिटल और हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में किया। पिछले साल कैटालिन कारिको और ड्रू वीसमैन को चिकित्सा का नोबेल दिया गया था। इन्हें न्यूक्लियोसाइड बेस संशोधनों से संबंधित उनकी खोजों के लिए यह सम्मान दिया गया था। इस खोज की वजह से कोरोनावायरस के खिलाफ प्रभावी एमआरएनए टीकों के विकास में मदद मिली थी। नोबेल दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है, जिसके तहत विजेताओं को एक स्वर्ण पदक, प्रमाणपत्र और करीब एक करोड़ स्वीडिश क्रोना यानी करीब 8.3 करोड़ रुपए की राशि दी जाती है। माइक्रो आरएनए एक छोटा अणु है जो जीन गतिविधि को रेगुलेट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भले ही हमारे शरीर की सभी कोशिकाओं में एक जैसे जीन होते हैं, लेकिन विभिन्न प्रकार की कोशिकाएं, जैसे मांसपेशी और तंत्रिका कोशिकाएं, अलग-अलग कार्य करती हैं। यह जीन रेगुलेशन के कारण संभव है, जो कोशिकाओं को केवल उन जीनों को 'चालू' करने की अनुमति देता है जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है। यह खोज जीवों के विकास और कार्य करने के तरीके को समझने के लिए मौलिक रूप से महत्वपूर्ण साबित हो रही है। माइक्रो आरएनए को लेकर एम्ब्रोस और रुवकुन की खोज ने इस विनियमन के होने का एक नया तरीका बताया है।

अमेरिकी विज्ञानी विक्टर एंब्रोस ने 1993 में पहला माइक्रो आरएनए खोजा था। जीवविज्ञानी गैरी ब्रूस रुवकुन ने दूसरे माइक्रो आरएनए एलईटी-7 की खोज की थी। उन्होंने पता लगाया कि विक्टर एंब्रोस द्वारा पहचाना गया पहला माइक्रो आरएनए लिन-4 आरएनए को कैसे नियंत्रित करता है। हमारे शरीर की हर कोशिका में लगभग 20,000 जीन होते हैं। ये जीन, प्रोटीन बनाने के लिए आवश्यक निर्देशों को एनकोड करते हैं। प्रोटीन हमारे शरीर के लिए बिल्डिंग ब्लॉक्स जैसे होते हैं। लेकिन हर कोशिका के काम करने का तरीका अलग होता है। जैसे मांसपेशी कोशिका और तंत्रिका कोशिका अलग-अलग काम करती हैं। इसलिए हर कोशिका को अलग तरह के प्रोटीन की जरूरत होती है। मतलब, हर कोशिका में कुछ खास जीन ही काम करते हैं। ये जीन, कोशिका के आसपास के वातावरण अनुसार बदलते रहते हैं।

जब कोई जीन काम करना शुरू करता है, तो उस जीन से एक नया अणु बनता है जिसे मैसेंजर आरएनए कहते हैं। यह आरएनए प्रोटीन बनाने के लिए कोशिका के एक हिस्से में जाता है। बहुत समय तक वैज्ञानिकों का मानना था कि जीन की गतिविधि मुख्य रूप से डीएनए से जुड़ने वाले विशेष प्रोटीन द्वारा नियमित होती है, जिन्हें ट्रांसक्रिप्शन फैक्टर कहा जाता है। लेकिन विक्टर एंब्रोस और गैरी रुवकुन ने एक नई खोज की व पाया कि माइक्रो आरएनए नाम के बहुत छोटे अणु भी इस काम में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब ये दोनों वैज्ञानिक 1993 में एक सीरीज में लगातार लैब में प्रयोग कर रहे थे, तब इन्होंने एक छोटे से कीड़े, सी. एलिगेंस में, एक विशेष प्रकार के मोलिक्युल की खोज की। इस मोलिक्युल को उन्होंने लिन-4 नाम दिया। बाद में यही मोलिक्युल माइक्रो आरएनए कहलाया। इसी तरह साल 2000 में वैज्ञानिकों ने एक और माइक्रो आरएनए लेट-7 की खोज की। यह माइक्रो आरएनए न केवल सी. एलिगेंस में बल्कि सभी जानवरों में पाया जाता है। अब तक एक हजार से ज्यादा माइक्रो आरएनए खोजे जा चुके हैं।

इंपीरियल कालेज लंदन में मोलिक्युलर आंकोलाजी की लेक्चरर डॉ. क्लेयर फ्लेचर के अनुसार, इस शोध ने कैंसर जैसी बीमारियों के इलाज के लिए विज्ञानियों के रास्ते खोल दिए हैं। माइक्रो आरएनए कोशिकाओं को नए प्रोटीन बनाने के लिए जेनेटिक निर्देश देता है। यह रोगों के उपचार के लिए दवाओं के विकास और बायोमार्कर के रूप में उपयोगी हो सकता है। त्वचा कैंसर के इलाज में माइक्रो आरएनए तकनीक किस तरह से मददगार हो सकती है, इस पर क्लीनिकल परीक्षण जारी हैं। गुणसूत्रों में मौजूद जानकारी हमारे शरीर की सभी कोशिकाओं के लिए निर्देश पुस्तिका की तरह है। हर कोशिका में एक जैसे गुणसूत्र होते हैं, इसलिए उन सभी के पास निर्देशों का एक ही सेट होता है। लेकिन मांसपेशी और तंत्रिका कोशिकाओं जैसी विभिन्न प्रकार की कोशिकाएं एक-दूसरे से बहुत अलग होती हैं। यह मनुष्यों सहित दूसरे जीवों के लिए बेहद मायने रखता है। मानव शरीर में एक हजार से ज्यादा माइक्रो आरएनए होते हैं। ऐसे में उनकी खोज ने हमें जीवों के बढ़ने और काम करने के तरीके के बारे में एक नया पहलू समझने में मदद की है। 1901 के बाद से चिकित्सा के क्षेत्र में दिया जाने वाला यह 115वां नोबेल पुरस्कार है।

धनतेरस

इस दिन की जाती है कुबेर जी की पूजा

धनतेरस के दिन धन्वंतरि मां लक्ष्मी और कुबेर जी की पूजा की जाती है और इस दिन खरीदारी करना शुभ माना जाता है।

ये चीजें खरीदें
सोना-चांदी के आभूषण, झाड़ू, लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति, धनिये के बीज, चांदी के सिक्के।

त्योहार का सीजन आ चुका है। 29 अक्तूबर से दीपोत्सव शुरू हो रही है, जो कि पांच दिन का पर्व है। जिसमें धनतेरस, छोटी दिवाली, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भैया दूज मनाया जाता है। इस बार धनतेरस का पर्व 29 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। धनतेरस के दिन धन्वंतरि, मां लक्ष्मी और कुबेर जी की पूजा की जाती है। इस दिन खरीदारी करने का रिवाज है। मान्यता है कि धनतेरस के दिन नई चीजों को खरीदना शुभ होता है। लोग इस अवसर पर सोने, चांदी और बर्तनों से लेकर वाहनों की खरीदारी करते हैं। हालांकि धनतेरस पर कुछ ऐसी भी चीजें हैं, जिनकी खरीदारी इस मौके पर भूल से भी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि धनतेरस पर कुछ चीजों को खरीदना अशुभ होता है। धनतेरस में खरीदारी की लिस्ट तैयार करने से पहले इन चीजों का ध्यान रखना जरूरी है।

लक्ष्मी-गणेश खरीदते वक्त रखें ये ध्यान

अधिकतर जगहों पर दिवाली के मौके पर माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। दिवाली में लक्ष्मी पूजन के लिए दो दिन पहले धनतेरस तिथि को भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की मूर्ति घर लाई जाती है। धनतेरस पर खरीदारी का विशेष महत्व है। हालांकि अक्सर लोग अज्ञानता व त्रुटिवश भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की मूर्ति खरीदते समय कुछ गलतियां कर देते हैं। वह ऐसी मूर्तियां घर ले आते हैं, जिनकी पूजा करना शुभ नहीं माना जाता है। तो गणेश लक्ष्मी की मूर्ति खरीदते समय इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

आशीर्वाद देते हुए माता लक्ष्मी की मूर्ति

इस बात का ध्यान रखें कि मां लक्ष्मी की मूर्ति कमल के फूल पर विराजमान हो। उनके एक हाथ में कमलल हो और दूसरे हाथ से आशीर्वाद दे रही हों। इसके अलावा धन की मटकी भी हो सकती है। माता की प्रतिमा का रंग गुलाबी होगा तो बेहतर रहेगा।

मिट्टी की मूर्तियां

मूर्ति मिट्टी की बनी होनी चाहिए। मिट्टी की मूर्ति को शुभ माना जाता है। आजकल बाजार में सीमेंट या पीओपी से बनी मूर्तियां भी बिकती हैं। ऐसी मूर्तियां भूल से भी घर न लाएं।

विश्राम मुद्रा में हो भगवान

भगवान की मूर्ति खरीदते वक्त ये याद रखें कि माता लक्ष्मी और गणेश जी की मूर्ति बैठी हुई मुद्रा में होनी चाहिए। खड़े मुद्रा में भगवान की मूर्ति घर न लाएं।

जुड़ी न हो मूर्तियां

भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की मूर्ति खरीदते समय इस बात का ध्यान रखें कि भले ही दिवाली के मौके पर उनकी पूजा एक साथ होती है, लेकिन मां लक्ष्मी और गणेश जी की मूर्ति एक साथ जुड़ी न हो। बल्कि गणेश जी की मूर्ति खरीदते समय ध्यान रखें कि उनकी सूंड बाईं तरफ हो।

उल्लू पर सवार लक्ष्मी की मूर्ति न लाएं

मूर्ति खरीदते समय ये सुनिश्चित कर लें कि अगर मां लक्ष्मी उल्लू पर सवार हों, तो ऐसी प्रतिमा खरीदकर न लाएं। ध्यान रखें कि लक्ष्मी गणेश की मूर्ति का रंग काला या सफेद न हो।

घर न लाएं नुकीली चीजें

धनतेरस के पावन मौके पर सोने-चांदी की चीजें खरीद सकते हैं लेकिन नुकीली और धारदार चीजें न खरीदें। घर पर चाकू, पिन, सुई जैसी नुकीली और धारदार चीजों को खरीदने से बचना चाहिए। धनतेरस पर नुकीली चीजें घर लाना अशुभ माना जाता है।

लोहे की वस्तुएं न खरीदें

ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक, लोहे को शनिदेव का कारण माना जाता है। धनतेरस के दिन खरीदारी के लिए निकलें तो लोहे की चीजों को खरीदकर घर न ले आएं। कहते हैं कि धनतेरस के दिन लोहे की चीजें खरीदने से धन कुबेर की कृपा नहीं होती है।

एल्युमिनियम का सामान न खरीदें

धनतेरस के मौके पर एल्युमिनियम से बने सामान की खरीदारी नहीं करनी चाहिए। इस दिन धातु से बने सामान को घर लाने से बचें। मान्यता है कि धातु दुर्भाग्य का सूचक है।

स्टील से बनी चीजों को खरीदने से बचें

धनतेरस के दिन अधिकतर लोग स्टील के बर्तन घर लेकर आते हैं। लेकिन स्टील एक शुद्ध धातु नहीं है। स्टील पर राहु का प्रभाव ज्यादा रहता है। ऐसे में स्टील से बना सामान न खरीदें।

हंसना मना है

एक लड़का घोड़े पर बैठकर कुछ लिख रहा था उसके पिता ने पूछा- तुम यहां क्यों बैठे हों? पुत्र- पिताजी! कल मास्टरजी ने घोड़े पर निबंध लिखने को कहा था, वही लिख रहा हूं।

प्रेमी- डियर! मैं तुम्हारे पिताजी से शादी की बात किस समय करूं? प्रेमिका ने कहा-जब कभी मेरे पिताजी के पैर में जूते न हों।

प्रीतो- अगर मैं किसी जवान लड़के को किस करूं, तो क्या होगा? बाबा- नरक में जाओगी! प्रीतो- अच्छा, अगर मैं आप को किस करुं तो? बाबा- चालाक औरत, स्वर्ग में जाना चाहती है!

प्रेमी जोड़ा आपस में बातें कर रहा था। प्रेमिका- हम लोग दो साल से एक दूसरे से प्रेम करते हैं। क्या तुमने कभी शादी के बारे में नहीं सोचा? प्रेमी- दरअसल बात यह है कि मुझे गलत मत समझना, मुझे इस बारे में अपनी पत्नी से बात करनी पड़ेगी तभी मैं तुम्हें कुछ जवाब दे सकूंगा..

कहानी — गौरैया और घमंडी हाथी

एक पेड़ पर एक चिड़िया अपने पति के साथ रहा करती थी। चिड़िया सारा दिन अपने घोंसले में बैठकर अपने अंडे सेती रहती थी और उसका पति दोनों के लिए खाने का इंतजाम करता था। वो दोनों बहुत खुश थे और अंडे से बच्चों के निकलने का इंतजार कर रहे थे। एक दिन चिड़िया का पति दाने की तलाश में अपने घोंसलें से दूर गया हुआ था और चिड़िया अपने अंडों की देखभाल कर रही थी। तभी वहां एक हाथी मदमस्त चाल चलते हुए आया और पेड़ की शाखाओं को तोड़ने लगा। हाथी ने चिड़िया का घोंसला गिरा दिया, जिससे उसके सारे अंडे फूट गए। चिड़िया को बहुत दुख हुआ। उसे हाथी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। जब चिड़िया का पति वापस आया, तो उसने देखा कि चिड़िया हाथी द्वारा तोड़ी गई शाखा पर बैठी रो रही है। चिड़िया ने पूरी घटना अपने पति को बताई, जिसे सुनकर उसके पति को भी बहुत दुख हुआ। उन दोनों ने घमंडी हाथी को सबक सिखाने का निर्णय लिया। वो दोनों अपने एक दोस्त कठफोड़वा के पास गए और उसे सारी बात बताई। कठफोड़वा बोला कि हाथी को सबक मिलना ही चाहिए। कठफोड़वा के दो दोस्त और थे, जिनमें से एक मधुमक्खी थी और एक मेंढक था। उन तीनों ने मिलकर हाथी को सबक सिखाने की योजना बनाई, जो चिड़िया को बहुत पसंद आई। अपनी योजना के तहत सबसे पहले मधुमक्खी ने हाथी के कान में गुनगुनाना शुरू किया। हाथी जब मधुमक्खी की मधुर आवाज में खो गया, तो कठफोड़वे ने आकर हाथी की दोनों आखें फोड़ दी। हाथी दर्द के मारे चिल्लाने लगा और तभी मेंढक अपने परिवार के साथ आया और एक दलदल के पास टर्राने लगा। हाथी को लगा कि यहां पास में कोई तालाब होगा। वह पानी पीना चाहता था, इसलिए दलदल में जाकर फंसा। इस तरह चिड़िया ने मधुमक्खी, कठफोड़वा और मेंढक की मदद से हाथी से बदला ले लिया।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — कम प्रयास से ही कार्यसिद्धि होगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। रोजगार में वृद्धि होगी। मित्रों की सहायता कर पाएंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वृषभ — दुष्टजनों से सावधान रहें, हानि पहुंचा सकते हैं। जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। कहीं से बुरी खबर मिल सकती है। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

मिथुन — जल्दबाजी में कोई भी लेन-देन न करें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। फालतू खर्च होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

कर्क — कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य पर खर्च होगा। वाणी में हल्के शब्दों के प्रयोग से बचें। चिंता तथा तनाव में वृद्धि होगी। नकारात्मकता रहेगी।

सिंह — शत्रु शांत रहेंगे। धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

कन्या — संतान पक्ष से स्वास्थ्य तथा अध्ययन संबंधी चिंता रहेगी। नई योजना बनेगी। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा। कार्यशैली में परिवर्तन करना पड़ सकता है।

तुला — थकान व कमजोरी रह सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। किसी धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

वृश्चिक — प्रेम-प्रसंग में हड़बड़ी न करें। विवाद हो सकता है। नकारात्मकता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। युवक व युवती विशेष सावधानी बरतें।

धनु — कानूनी बाधा संभव है। हल्की हंसी-मजाक करने से बचें। विरोधी सक्रिय रहेंगे। धनहानि किसी भी तरह हो सकती है। जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा।

मकर — सुख के साधनों पर व्यय होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि के योग हैं। प्रॉपर्टी के काम बड़ा लाभ दे सकते हैं। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। कुसंगति से बचें।

कुम्भ — कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। पार्टी व पिकनिक का कार्यक्रम बन सकता है। कोई मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद प्राप्त होगा।

मीन — दूसरे से अधिक अपेक्षा करेंगे। जल्दबाजी से काम में बाधा उत्पन्न होगी। दौड़धूप अधिक रहेगी। बुरी सूचना मिल सकती है, धैर्य रखें। बनते कामों में देरी होगी।

बॉलीवुड | मन की बात

मुसीबत में हमेशा साथ देता है खान परिवारः सीमा सजदेह

सोहेल खान की एक्स वाइफ सीमा सजदेह इन दिनों ओटीटी प्लेटफॉर्म पर फैबुलस लाइव्स बनाम बॉलीवुड वाइव्स के सीजन 3 में नजर आ रही हैं। यहां उन्होंने अपनी निजी जिंदगी को लेकर कई खुलासे किए हैं। हाल ही में सीमा ने सलमान खान के बारे में बात कीं। सीमा सजदेह ने सलमान खान और पूरे खान परिवार की खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि खान फैमिली मुसीबत की घड़ी में हमेशा साथ खड़ी नजर आती है। सलमान खान चट्टान बन जाते हैं। बीते दिनों मलाइका अरोड़ा के पिता अनिल मेहता का निधन हुआ, तब पूरा खान परिवार साथ खड़ा नजर आया। सलमान भी मलाइका से मिलने पहुंचे थे। हाल ही में एक मीडिया इंटरव्यू के दौरान सीमा सजदेह ने इस बारे में बात की। अनिल मेहता के सुसाइड की खबर सुनकर मलाइका के एक्स-हसबैंड और एक्टर अरबाज खान सबसे पहले उनके माता-पिता के घर पहुंचे थे। इसके बाद सलीम खान, सोहेल खान सहित पूरी खान फैमिली नजर आई। बाद में सलमान खान भी मलाइका से मिलने पहुंचे और संवेदना व्यक्त की। वर्ष 2017 में मलाइका और अरबाज खान का तलाक हो गया। अरबाज के तलाक के बाद यह पहली बार था जब सलमान खान, मलाइका से मिले। इस बात से सीमा काफी प्रभावित हुईं। सीमा ने सलमान खान और खान परिवार की तारीफ करते हुए कहा, वे चट्टान की तरह हैं। जब कोई संकट आता है या आपको किसी चीज की जरूरत होती है, तो वे सभी वहां मदद के लिए मौजूद होते हैं। यही बात उन्हें एक परिवार बनाती है। सीमा सजदेह और सोहेल खान का भी तलाक हो चुका है। वर्ष 2022 में दोनों की राहें जुदा हो गईं। सीमा और सोहेल के दो बच्चे- निरवान और योहान हैं। इनकी परवरिश दोनों मिलकर कर रहे हैं। बात करें सलमान खान की तो वे इन दिनों बिग बॉस 18 को होस्ट कर रहे हैं। सलमान खान इन दिनों गैंगस्टर लॉरेन्स बिश्नोई की तरफ से मिल रही जान से मारने की कथित धमकियों के चलते भी चर्चा में हैं। भाईजान की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

स्कूल में सारा से डरती थीं अनन्या

अनन्या पांडे अपनी हाल ही में रिलीज फिल्म कंट्रोल को लेकर काफी चर्चा में चल रही हैं। फिल्म को प्रशंसकों ने अनन्या के अभिनय की खूब तारीफ की है। अभिनेत्री अक्सर अपने प्रशंसकों को अपनी परफॉर्मेंस से प्रभावित करती हैं।अभिनेत्री ने खुलासा किया कि जब वह स्कूल में थीं तो सारा अली खान से बहुत डरती थीं क्योंकि सारा उन्हें ए गर्ल कहकर बुलाती थीं। अनन्या ने कहा कि सारा का डर उनके नेचर की वजह से था क्योंकि वह किसी से कुछ भी बोलने और करने से नहीं डरती थी। अनन्या ने कहा, वह मुझसे लगभग तीन साल बड़ी है। वह अब भी मुखर है, लेकिन वह स्कूल में और भी ज्यादा मुखर थीं। अगर वह एक सीढ़ी से नीचे उतर रही होती, तो मैं दूसरी सीढ़ी से उतरती थी। अनन्या ने कहा कि उन्हें नहीं पता था कि मेरा नाम क्या है और वह नहीं मैं कौन हूं। अनन्या ने यह भी साझा किया कि उन दोनों ने स्कूल में एक ड्रामा में एक साथ अभिनय किया था और क्योंकि सारा को उनका नाम नहीं पता था, इसलिए वह उसे ए गर्ल कहकर बुलाती थीं। अनन्या ने आगे कहा, मुझे लगता है कि हमने स्कूल में एक साथ एक नाटक किया था। वह मुख्य की तरह थी और मैंने उनका छाता या कुछ और पकड़ रखा था। मैं पीछे थी। इसलिए वह कहती थी ए गर्ल यहां आओ। मुझे नहीं लगता उन्हें नहीं पता खा ति मेरा नाम ए से शुरू हुआ था। इसलिए वह शायद ऐसे बुलाती थीं। अनन्या ने आगे बताया कि अब जब मैं उन्हें बताती हूं तो वह कहती है। क्या बकवास है। मैंने आपके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया था, लेकिन वह मेरा नाम भी नहीं जानती थी। दोनों हाल के वर्षों में दोस्त बन गए हैं।

अनन्या पांडे बोलीं- सारा उन्हें ए गर्ल कहकर बुलाती थीं, अब हैं अच्छे दोस्त

बड़ी एक्शन फिल्मों के लिए अभी नहीं हूं तैयारः वरुण

बॉलीवुड अभिनेता वरुण धवन को अपनी एक्टिंग से प्रशंसकों के दिलों पर राज करते हैं। बड़े बजट की फिल्मों में काम करने खासतौर पर एक्शन फिल्मों को लेकर उन्होंने बात की। वरुण धवन ने कहा कि वह इंडस्ट्री में अपने दृष्टिकोण को लेकर सही सोचते हैं। उन्होंने कहा कि वह अभी तक अच्छे बॉक्स ऑफिस रिटर्न के स्तर तक नहीं पहुंच पाए, जो आदित्य चोपड़ा की प्रमुख एक्शन फिल्मों के बजट को सही ठहरा पाए। वरुण धवन ने कहा कि आदित्य चोपड़ा ने उनके साथ एक्शन फिल्म बनाने के लिए बड़ा बजट रखने की बात कही है। उन्होंने बताया कि आदित्य चोपड़ा ने उनके साथ एक एक्शन फिल्म बनाने की आवश्यकता जताई तो उन्हें संदेह हुआ। उन्होंने कहा कि आदित्य चोपड़ा ने इस बात को लेकर उनसे कहा कि बड़ी बजट की एक्शन फिल्में काफी अच्छी कमाई करती हैं। वरुण धवन ने कहा, मैं जिस स्थिति में हूं, उसके बारे में मैं बहुत सही तरीके सोचता हूं। और हां, मैं कर सकता था। मैं एक्शन फिल्म कर सकता हूं, लेकिन ये जिस स्थान पर मैं हूं, ये सही नहीं होगा। यह पर्याप्त नहीं होगा। बॉलीवुड

बॉलीवुड | मसाला

अभिनेता वरुण धवन ने कहा कि उनके लिए मिड लेवल की एक्शन फिल्म अच्छी हो सकती है। उनका मानना है कि मिड बजट फिल्में भी अच्छा प्रभाव डालती हैं। वरुण की आगामी वेब सीरीज और फिल्मों में सबसे पहले वरुण की सीरीज सिटाडेल हनी बनी रिलीज होगी। हनी बनी का प्रीमियर 7 नवंबर को भारत में प्राइम वीडियो पर रिलीज होगी। बॉलीवुड अभिनेता वरुण धवन के साथ इस एक्शन ड्रामा सीरीज में समांथा रुथ प्रभु नजर आएंगी। सीरीज में सामंथा और वरुण के अलावा के के मेनन, सिमरन बग्गा और एम्मा कैनिंग भी अहम भूमिका में नजर आएंगे। यह मूल रूप से सिटाडेल सीरीज का प्रीक्वल है।

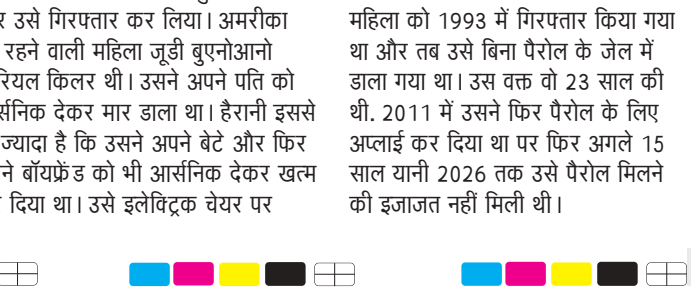

इस गांव में मिली एलियन की लाश सबके सामने अचानक हो गई गायब

एलियंस को लेकर शुरू से बहस चली आ रही है। कई लोगों का मानना है कि एलियंस नहीं होते। वहीं कई लोग मानते हैं कि एलियंस होते हैं और कई लोगों ने तो एलियंस और यूएफओ तक देखने के दावे किए हैं। ऐसा दावा करने वाले कई लोगों ने सोशल मीडिया पर तस्वीरें और वीडियो भी पोस्ट किए हैं। हालांकि इनकी पुष्टि नहीं हो पाई है। अब एक गांव एलियन को लेकर चर्चा में बना हुआ है। दरअसल, बोलीविया नाम एक छोटे से गांव में हाल ही एक एलियन बच्चे की लाश मिली है। हालांकि थोड़ी ही देर में यह लाश अपने आप गायब हो गई लेकिन स्थानीय लोगों ने उसकी तस्वीर खींच ली थी जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। एलियन की लाश मिलने की खबर के कारण ये छोटा सा गांव रातोरात चर्चा में आ गया। यह गांव साउथ अमरीका में है। साथ ही दावा किया जा रहा है कि स्थानीय लोगों ने इस एलियन की लाश देखी। यह लाश एक नाली में मिली लेकिन अचानक लाश सबके सामने से गायब हो गई। सबूत के तौर पर सिर्फ लोगों द्वारा खींची गई इसकी लाश ही रह गई। इसके बाद एलियन की लाश की तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की गई और वायरल हो गई। हालांकि इस दावे में कितनी सच्चाई है इसकी अभी तक पुष्टि नहीं हो पाई है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, ये एलियन ब्लू रंग का था और बेहद छोटा था। उनके अनुसार, जिस दिन ये लाश मिली उससे दो दिन पहले लोगों को आसमान में हरा रंग नजर आया था। अब कयास लगाया जा रहा है कि ये रोशनी यूएफओ की थी। लोगों का ये भी कहना है कि उन्हें अंधेरे में कई छोटे-छोटे बच्चे जैसे दिखने वाले जीव नजर आते थे। लेकिन उन्होंने कभी सोचा नहीं था कि ये एलियंस हो सकते हैं। बोलीविया के जिस गांव में ये घटना घटी, उसके बारे में ज्यादा लोगों को तो पता भी नहीं है। 2001 में हुई जनगणना में इस जगह की जनसंख्या 13 सौ थी। हालांकि, अब इस एलियन की लाश के कारण गांव की काफी चर्चा होने लगी है।

अजब-गजब | दुनिया की ये हैं बहुत ही खतरनाक बीवियां

पति का मर्डर कर बच्चों को परोसा मांस

पति पत्नी का रिश्ता प्रेम का रिश्ता होता है। उनमें झगड़े भी बहुत होते हैं लेकिन प्रेम उन्हें बांधे रखता है। लेकिन कई बार ऐसी घटनाएं घट जाती है कि गुस्से में पति पत्नी में से एक गलत कदम उठा लेता है। आपने भी कई ऐसी घटनाएं देखी और सुनी होंगी कि किसी पत्नी ने अपने पति की बेरहमी से हत्या कर दी। आज हम आपको दुनिया की ऐसी ही 5 खतरनाक पत्नियों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने अलग अलग वजहों से अपने पतियों की बेरहमी से हत्या कर दी। यह घटना 2 साल पहले ब्राजील में घटित हुई थी। साओ गोनकालो की रहने वाली डेयाने क्रिस्टीना रॉड्रिगस नाम की महिला ने अपने पति को मार दिया। पुलिस ने महिला को गिरफ्तार कर लिया। महिला ने पति के प्राइवेट पार्ट को काटकर उसे तेल में फ्राई कर दिया था। कोर्ट में महिला के वकील ने कहा था कि उसने आत्म रक्षा में पति को मार डाला। वहीं मृतक की बहन का कहना था कि उसका भाई बेवफाई कर रहा था, इस वजह से उसकी भाभी ने उसके भाई को मार डाला। दूसरी घटना ऑस्ट्रेलिया की है। यहां कैथरीन नाइट नाम की महिला ने अपने पति को मारकर उसके टुकड़ों को पकाया था और फिर बच्चों को परोस दिया था। साल 2000 की इस घटना

में महिला ने अपने पति पर चाकू से 37 बार वार किया था। इसके बाद उसने पति के सिर को कुकर में पकाया और सब्जी के साथ बच्चों को परोस दिया। लेकिन जब महिला ऐसा कर रही थी तो पुलिस आ गई और उसे गिरफ्तार कर लिया। अमरीका की रहने वाली महिला जूडी बुएनोआनो सीरियल किलर थी। उसने अपने पति को आर्सनिक देकर मार डाला था। हैरानी इससे भी ज्यादा है कि उसने अपने बेटे और फिर अपने बॉयफ्रेंड को भी आर्सनिक देकर खत्म कर दिया था। उसे इलेक्ट्रिक चेयर पर बैठाकर मौत की सजा दी गई थी। कैलिफोर्निया की रहने वाली ओमाइमा नीलसन पर आरोप है कि उसने अपने 56 साल के पति को मौत के घाट उतारा और फिर उसके शरीर को पकाकर खा गई। महिला को 1993 में गिरफ्तार किया गया था और तब उसे बिना पैरोल के जेल में डाला गया था। उस वक्त वो 23 साल की थी. 2011 में उसने फिर पैरोल के लिए अप्लाई कर दिया था पर फिर अगले 15 साल यानी 2026 तक उसे पैरोल मिलने की इजाजत नहीं मिली थी।

भाजपा सिर्फ अपने कॉरपोरेट मित्रों को फायदा पहुंचा रही

» जयराम रमेश ने लगाए महायुति सरकार पर कई गंभीर आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस ने रविवार को आरोप लगाया कि महाराष्ट्र की भाजपा समर्थित महायुति सरकार ने सत्ता में रहते हुए राज्य के लोगों की भलाई की बजाय सिर्फ अपने कॉरपोरेट मित्रों को फायदा पहुंचाने का काम किया है। जयराम रमेश ने बीजेपी पर निशाना साधते हाल ही में पास किए गए कुछ प्रोजेक्ट्स को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की है। कांग्रेस महासचिव एवं संचार प्रभारी जयराम रमेश ने आरोप लगाया कि नवंबर 2023 में अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल) के एक प्रमुख सलाहकार को केंद्र की विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति (ईएसी) में नियुक्त किया गया।

जो एजीईएल जैसी कंपनियों द्वारा बनाई गई जलविद्युत परियोजनाओं के प्रस्तावों को मंजूरी देती है। उन्होंने कहा कि इसके तुरंत बाद, दिसंबर 2023 में कोल्हापुर के 100 से अधिक गांवों के निवासी एजीईएल की 7,000 करोड़ रुपये की पटगांव पंप स्टोरेज परियोजना के खिलाफ आंदोलनरत होने लगे थे। कांग्रेस नेता ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि चूंकि कोल्हापुर कम वर्षा और पानी की सीमित उपलब्धता से जूझ रहा है तथा परियोजना को अनुमति दिए जाने से पहले कोई सार्वजनिक बैठक आयोजित नहीं की गई थी, इसलिए स्थानीय लोग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि इससे पानी की स्थिति और खराब होगी। चिंता की बात ये है कि यह अदाणी की उन तीन परियोजनाओं में से एक है, जिन्हें पश्चिमी घाटों के पारिस्थितिकी दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में मंजूरी मिली है। कांग्रेस नेता ने कहा कि विशेषज्ञों के अनुसार पर्यावरण मंत्रालय के अधिकारियों ने संवेदनशील क्षेत्रों में इन लाल श्रेणी परियोजनाओं को अनुमति देने के लिए कानून की चुनिंदा तरीके से व्याख्या की है। रमेश ने दावा किया कि अदाणी के अपने पर्यावरण मूल्यांकन में निर्माण के दौरान वनों को भारी नुकसान पहुंचने की चेतावनी दी गई थी, लेकिन फिर भी परियोजनाओं को मंजूरी दे दी गई। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और महायुति द्वारा कानूनी प्रक्रिया में की गई छेड़छाड़ से स्थानीय समुदायों और स्थानीय पर्यावरण पर स्पष्ट रूप से गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

हरियाणा में हार के बाद गठबंधन में सौदेबाजी की ताकत खो रही कांग्रेस

नई दिल्ली। हरियाणा विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेस विपक्षी गठबंधन इंडिया के भीतर सौदेबाजी की ताकत खो रही है। अगले महीने होने वाले महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनावों में पार्टी के ऐतिहासिक रूप से कम सीटों पर चुनाव लड़ने की संभावना है। 288 सीटों वाली महाराष्ट्र विधानसभा के लिए 20 नवंबर को होने वाले चुनावों में कांग्रेस 110 से कम सीटों पर चुनाव लड़ने की उम्मीद कर रही है। 2019 में कांग्रेस ने 147 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 44 सीटें जीती थी। चुनाव में शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने भी अच्छी खासी संख्या में सीटें जीती थी। इस बार कांग्रेस को अपने पुराने गढ़ मुंबई क्षेत्र में शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) को सीटें देने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। इस क्षेत्र में 36 सीटों में से 10 सीटें पहले ही शिवसेना (यूबीटी) को दी जा चुकी हैं, जिससे कांग्रेस के कार्यकर्ता निराश है और पार्टी के भीतर विद्रोह फैल रहा है। वहीं यूपी उपचुनाव में भी कांग्रेस को सभी दस सीटे सपा को देनी पड़ी है।

भाजपा अकेले नहीं जीत सकती चुनाव: फडणवीस

» बोले- महायुति गठबंधन की पार्टियां एकजुट होकर चुनाव लड़कर जीत सकती है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

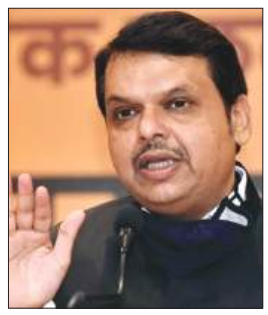

मुंबई। महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी महाराष्ट्र में अकेले विधानसभा चुनाव नहीं जीत सकती। मगर भाजपा चुनाव के बाद सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरेगी। डिप्टी सीएम ने कहा कि हमें जमीनी हकीकत को लेकर व्यावहारिक होना होगा। सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन में शामिल भाजपा, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी एकजुट होकर चुनाव लड़ सकते हैं और जीत सकते हैं।

डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि भाजपा राज्य में विधानसभा चुनाव अकेले नहीं जीत सकती, लेकिन यह सच है कि हमारे पास सबसे ज्यादा सीट और सबसे ज्यादा मत प्रतिशत है। चुनाव के बाद भाजपा राज्य में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरेगी। तीनों दलों के मतों का एकीकरण ही हमें विजयी बना सकता है। भाजपा ने अब तक राज्य विधानसभा की 288 सीट में से 121 पर उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। टिकट न मिलने पर भाजपा नेताओं की नाराजगी और बगावत को लेकर फडणवीस ने कहा कि कोई भी पार्टी यह नहीं कह सकती कि उसे दूसरे दलों के मत चाहिए, लेकिन वह सीट बंटवारे पर समझौता करने को तैयार नहीं है। मुझे हमारे कुछ महत्वाकांक्षी दावेदारों के लिए दुख है। जिन्हें इस बार चुनाव लड़ने का मौका नहीं दिया जा सका।

घरेलू जमीन पर यशस्वी ने एक वर्ष में बनाए 1000 रन

» गुंडप्पा विश्वनाथ को पीछे छोड़ ऐसा करने वाले बने सबसे युवा बल्लेबाज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में अन्य भारतीय बल्लेबाजों का बल्ला जहां खामोश रहा, वहीं सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने दूसरी पारी में शानदार अर्धशतकीय पारी खेली थी। जब तक यशस्वी क्रीज पर थे, भारत की जीत की उम्मीद बनी हुई थी। यशस्वी भले ही टीम को यह मैच नहीं जिता सके, लेकिन उन्होंने घरेलू जमीन पर एक कैलेंडर वर्ष में 1000 रन पूरे कर लिए।

यशस्वी ने न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच की पहली पारी में 30 रन बनाए जबकि दूसरी पारी में 77 रन बनाए। उन्होंने 1315 गेंदों में एक कैलेंडर वर्ष में टेस्ट में 1000 रन पूरे किए। 22 वर्षीय यशस्वी इसके साथ ही ऐसा करने वाले सबसे युवा भारतीय बन गए। उन्होंने इस मामले में दिलीप वेंगसरकर को पीछे छोड़ा जिन्होंने 1979 में 23 साल की उम्र में 1000 रन पूरे किए थे। यशस्वी इसके साथ ही टेस्ट में एक कैलेंडर वर्ष में घरेलू जमीन पर सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने इस मामले में भारत के पूर्व बल्लेबाज गुंडप्पा विश्वनाथ को पीछे छोड़ दिया है जिन्होंने 1979 में घर में एक कैलेंडर वर्ष में 1047 रन बनाए थे। यशस्वी इस मामले में पूर्व भारतीय कप्तान विराट कोहली से भी आगे निकल गए हैं जिन्होंने 2016 में 964 रन और 2017 में 898 रन बनाए थे। मालूम हो कि, अब तक बहुत कम खिलाड़ी एक कैलेंडर वर्ष में घरेलू टेस्ट मैचों में 1000+ रन बनाने में कामयाब हुए हैं। घरेलू मैदान पर खेले गए टेस्ट मैचों में एक कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक रन बनाने का रिकॉर्ड पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान माइकल क्लार्क के नाम है, जिन्होंने 2012 में कुल 1407 रन बनाए थे। उनके बाद पाकिस्तान के मोहम्मद यूसुफ है, जिन्होंने 2006 में 1126 रन बनाए थे।

डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए भारत को जीतने होंगे चार मैच

भारत भले ही सीरीज गंवा चुका है, लेकिन उसके पास तीसरे टेस्ट में अच्छा प्रदर्शन करके खुद को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल की दौड़ में बनाए रखने का मौका रहेगा। भारत को डब्ल्यूटीसी के फाइनल में पहुंचने के लिए छह में से चार मैच जीतना जरूरी है। अगर भारतीय टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ अंतिम टेस्ट जीत लेती है तो उसे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में कम से कम तीन मैच जीतने होंगे। इसी को देखते हुए मुख्य कोच गौतम गंभीर और टीम प्रबंधन के अन्य सदस्य चाहते हैं कि सभी खिलाड़ी प्रत्येक ट्रेनिंग सत्र में हिस्सा लें। भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की सीरीज का तीसरा मुकाबला एक नवंबर से मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम पर खेला जाना है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी और दो आईपीएस भाजपा के साथ : झामुमो

» सुप्रियो भट्टाचार्य ने की चुनाव आयोग से हटाने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड में विधानसभा चुनाव से पहले सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी के रवि कुमार और दो वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों पर भाजपा के पक्ष में काम करने का आरोप लगाया है। झामुमो ने आयोग को पत्र लिखकर तीनों अधिकारियों को हटाने की मांग की है।

झामुमो के प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा, गिरिडीह पुलिस ने आज मंडल मुर्मू के साथ कुछ अन्य व्यक्तियों को ले जा रहे वाहन को रोका। जब पूछा गया, तो वाहन में बैठे लोगों ने बताया नहीं कि वे कहां जा रहे थे। इसलिए, पुलिस ने वाहन को हिरासत में ले लिया। मंडल मुर्मू झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रस्तावकों में से एक हैं, जिन्होंने बरहाइट विधानसभा क्षेत्र से अपना नामांकन दाखिल किया है। भट्टाचार्य ने कहा कि हेमंत सोरेन हमारे स्टार प्रचार हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सोरेन के प्रस्तावक को चुनावी नतीजों पर प्रतिकूल प्रभाव डालने के लिए प्रभावित किया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्य निर्वाचन अधिकारी और दो वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग करके गिरिडीह प्रशासन पर वाहन छोड़ने के लिए दबाव डाल रहे हैं। भट्टाचार्य ने कहा कि यह आदर्श आचार संहिता का घोर उल्लंघन है और उन्होंने चुनाव आयोग से मामले की जांच करने का आग्रह किया। और झारखंड में निष्पक्ष चुनावी प्रक्रिया सुनिश्चित करने का भी आग्रह किया।

भाजपा ने की बिना सबूत आरोप लगाने पर झामुमो प्रवक्ता पर कार्रवाई की मांग

वहीं, विपक्षी भाजपा ने भी चुनाव आयुक्त को पत्र लिखकर वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ बिना किसी सबूत के गंभीर आरोप लगाने के लिए झामुमो प्रवक्ता के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। भाजपा ने कहा कि झामुमो को मुर्मू के साथ कार में आए लोगों का विवरण सामने लाना चाहिए। बता दें कि 81 सदस्यीय झारखंड विधानसभा के लिए 13 नवंबर और 20 नवंबर को चुनाव होने हैं।

कार्तिक पूर्णिमा मेला समिति की बैठक में तय हुईं जिम्मेदारियां

» इंदिराडैम गोमतीतट पर 15 से 18 नवंबर के बीच आयोजित होगा मेला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कार्तिक पूर्णिमा स्नान मेला समिति की अति मत्वपूर्ण बैठक गोमती तट मेला स्थल पर हुई। बैठक के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक राजेंद्र यादव व संचालन मेला कमेटी के अध्यक्ष सुरेश यादव ने किया। जिसमें सैकड़ो प्रधान बीटीसी क्षेत्र के सम्मानित गणमान्य शख्शियतों ने अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। बैठक में मेले की रूपरेखा तैयार की गई और सभी लोगों से अलग अलग सुझाव मांगें गये।

15 नवंबर से लेकर 18 नवंबर तक का 4 दिवसीय मेले को भव्य बनाने के लिए व्यापक तौर पर मौजूद लोगों ने अपने अपने सुझाव रखे। मेला कमेटी के अध्यक्ष सुरेश यादव ने बताया कि वर्षों से कार्तिक पूर्णिमा पर इस मेले का आयोजन होता आया है। जिसमें परंपरा रही है कि सर्वप्रथम गोमती पूजन किया जाता है जो कि मनकामेश्वर मंदिर की महंत श्री दिव्या गिरि जी के द्वारा होता है।

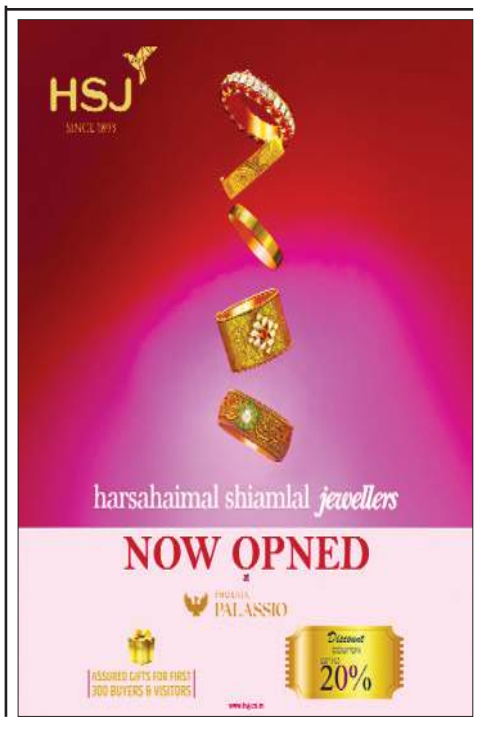

कस्टोडियल डेथ मामले में घिरी योगी सरकार

भारी किरकिरी के बीच सीएम ने की पीड़ित परिवार से मुलाकात, परिवार को दी 10 लाख की आर्थिक सहायता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पुलिस की हिरासत में मोहित पांडेय नाम के युवक की मौत पर यूपी की सियासत गर्मा गई है। विपक्ष ने बीजेपी सरकार को घेरते हुए गंभीर आरोप लगाए, इसी बीच सरकार की भारी किरकिरी होने के चलते मृतक मोहित पांडेय के परिजनों से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास पर मुलाकात की। इस दौरान सीएम योगी ने मोहित पांडेय के परिवार को 10 लाख की आर्थिक सहायता दी है और कहा कि दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

वहीं इस मामले में पहले ही पुलिस कमिश्नर ने बड़ी कार्रवाई करते हुए रविवार को ही चिनहट थाने के प्रभारी अश्वनी चतुर्वेदी को हटाने का आदेश देते हुए, उनकी जगह सब इंस्पेक्टर भरत पाठक को चिनहट थाने का नया थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है।

इस पूरे मामले में पुलिस का दावा है कि मोहित की सेहत अचानक बिगड़ गई और अस्पताल ले जाने के बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया, परिजनों का आरोप है कि मोहित की पीट-पीटकर हत्या की है। इस मामले का एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया था, जिसमें उसकी तबीयत बिगड़ती दिख रही थी। इस फुटेज में दिखाई दे रहा था कि लॉकअप में एक अन्य शख्स मोहित की मदद करने की कोशिश कर रहा है।

'पुलिस हिरासत' का नाम बदलकर 'अत्याचार गृह' रख दे सरकार: अखिलेश यादव

लॉकअप में युवक की मौत मामले में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा, उप्र की राजधानी में पिछले 16 दिनों में पुलिस 'हिरासत में मौत (हत्या पढ़ा जाए)' का दूसरा समाचार मिला है। नाम बदलने में माहिर सरकार को अब 'पुलिस हिरासत' का नाम बदलकर 'अत्याचार गृह' रख देना चाहिए। वहीं अखिलेश यादव ने आगे लिखा कि पीड़ित परिवार की हर मांग पूरी की जाए, हम उनके साथ हैं।

लॉकअप में मौत होना निंदनीय है : मायावती

मायावती ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा, यूपी की राजधानी लखनऊ में पुलिस हिरासत में व्यापारी मोहित पाण्डे की कथित तौर पर हुई मौत की घटना पर परिवार एवं लोगों में रोष व आक्रोश व्याप्त होना स्वाभाविक। यह घटना अति-निन्दनीय. सरकार पीड़ित परिवार को न्याय देने के लिए प्रभावी कदम अवश्य उठाए।% मायावती ने कहा, इसके अलावा, यहां प्रदेश में महिलाओं पर भी आए दिन हो रही जुल्म-ज्यादती की घटनाएं अति-चिन्तनीय, जिन पर भी सरकार ऐसे अपराधियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई करे, जो अत्यन्त जरूरी।

क्रूरता का पर्याय बन गई है यूपी पुलिस : प्रियंका

यूपी में पुलिस ने दो युवकों को हिरासत में लिया और अगली सुबह एक की मौत हो गई। एक पखवाड़े में यूपी पुलिस की हिरासत में यह दूसरी मौत है। परिजनों का आरोप है कि पुलिस ने उनके बेटे की हत्या कर दी, यूपी हिरासत में होने वाली मौतों के मामले में पूरे देश में पहले स्थान पर है। प्रदेश में भाजपा ने ऐसा जंगलराज कायम किया है जहां पुलिस क्रूरता का पर्याय बन चुकी है। जहां कानून के रखवाले ही जान ले रहे हों, वहां जनता न्याय की उम्मीद किससे करे?

दोषी पुलिस अधिकारी के खिलाफ भी होगी कड़ी कार्रवाई : पाठक

राजधानी लखनऊ में दो दिन पहले पुलिस हिरासत में व्यापारी की मौत हो गई थी। इस पर सोमवार को डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने दुख जताया। उन्होंने कहा कि यह घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार ने इसे काफी गंभीरता से लिया है। पूरे मामले की गहनता से जांच की जाएगी। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने कहा कि चिनहट थाने में पुलिस हिरासत में मौत के मामले में उच्चस्तरीय जांच चल रही है। मामले में मां की तहरीर पर हत्या का मामला दर्ज किया गया है। यदि पुलिस अधिकारी भी दोषी पाए जाते हैं, तो उनके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। बताते चलें कि चचेरे भाई से पैसों के विवाद में पुलिस ने मोहित पांडेय को घर से उठाया था। उसे छुड़ाने के लिए थाने पहुंचे उसके भाई शोभाराम को भी पुलिस ने बंद कर दिया था। लॉकअप में उसकी आंखों के सामने भाई मोहित की तबीयत बिगड़ गई थी। इसके बाद उसकी मौत हो गई थी।

बटेंगे तो कटेंगे ऐसी बातें करने वाले बाद में 'पिटेंगे': शिवपाल

» बटेंगे तो कटेंगे बयान पर शिवपाल का तंज

» शिवपाल ने अनुजेश को बताया भगौड़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

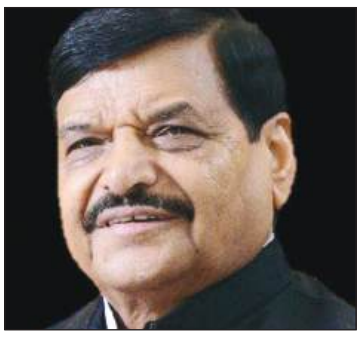

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 'बंटेंगे तो कटेंगे' बयान पर बड़ा पलटवार करते हुए तंज कसा है। शिवपाल यादव ने कहा कि पीडीए न तो बंटेगा, न ही कटेगा और जो ऐसी बातें करेगा वह बाद में 'पिटेगा'। शिवपाल यादव का यह बयान सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के बयान की समाजवादी पार्टी की ये तगड़ी काट है। दरअसल उपचुनाव में बीजेपी लगातार हिंदुत्व के मुद्दे पर चुनाव लड़ना चाह रही है। इसलिए सीएम योगी के इस बयान को बीजेपी इस चुनाव में भुनाने की भरपूर कोशिश कर रही है और लगातार यूपी से लेकर महाराष्ट्र तक इस बयान के बहाने चुनाव में लाभ लेने की पूरी कोशिश कर रही है।

वहीं समाजवादी पार्टी पीडीए के मुद्दे पर लगातार आगे बढ़ रही है और प्रदेश और देश में पिछड़े-दलितों और वंचितों की आवाज उठाने के मुद्दे को बुलंद कर रही है। शिवपाल यादव इन दिनों उपचुनाव में पूरी ताकत लगा रखे हैं इसी कड़ी में वह मैनपुरी में करहल विधानसभा चुनाव के लिये सपा प्रत्याशी तेज प्रताप सिंह यादव के पक्ष में घिरोर में चुनावी सभा की। जनसभा के बाद संवाददाताओं ने जब योगी के इस बयान पर जब पत्रकारों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के %बंटोगे तो कटोगे% के बयान को लेकर प्रतिक्रिया पूछी।

शिवपाल ने तंज कसते कहते हुए कहा तगड़ापलटवार करते हुए कहा कि कि %%पीडीए न तो बंटेगा, न कटेगा और जो ऐसी बातें करेगा, बाद में पिटेगा। दरअसल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी में जन्माष्टमी पर हिंदुओं को जातियों में नहीं बंटने की सलाह दी थी। उन्होंने कहा था कि विपक्ष चाहता है कि हिंदू लोग जातियों में विभाजित होकर कमजोर बने रहें। आदित्यनाथ ने पड़ोसी देश बांग्लादेश में हिंदुओं के मारे जाने का हवाला देकर कहा था कि बंटेंगे तो कटेंगे।

इसी के जवाब में सपा महासचिव शिवपाल यादव ने बड़ा बयान दिया और कहा पीडीए न तो बंटेगा, न ही कटेगा और जो ऐसी बातें करेगा वह बाद में 'पिटेगा'। वहीं लगातार अधिकारियों के दबाव के बारे में जब पत्रकारों ने सवाल किया तो शिवपाल यादव ने कहा कि हम संविधान की रक्षा करना चाहते हैं, वह (अधिकारी) वोट नहीं डालने दे रहे, वह वोट मांगने का काम करते हैं। साथ उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लोग जनता से वोट नहीं मांगते बल्कि वो लोग अधिकारियों से वोट मंगवाते हैं, उनका काम है भाजपा को ज़िताओ जनता को धमकाओ। तेज प्रताप यादव के लिए वोटों की अपील करने के लिए पहुंचे शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि इस बार लोगों में बहुत जोश है, और करहल विधानसभा से तेजप्रताप की बड़ी जीत होगी। वहीं भाजपा प्रत्याशी अनुजेश यादव को शिवपाल यादव ने भगौड़ा बताते हुए कहा कि अब रिश्तेदारी टूट चुकी है और पार्टी में भी कभी ऐसे भगोड़ों को वापस नहीं लिया जाएगा।

भाजपा की चुनाव संबंधी बैठक में जुटे दिग्गज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी में इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान (आईजीपी) के हॉल में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सदस्यता एवं संगठनात्मक चुनाव संबंधित बैठक शुरू हुई। बैठक में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी, चुनाव अधिकारी डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डेय, प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य मंच पर उपस्थित हैं।

संगठनात्मक चुनाव के संबंध में भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी ने बताया कि यह तीन से चार माह की प्रक्रिया होती है। ?इसमें सर्वप्रथम सदस्यता अभियान क्रमवार चलता है। सक्रिय सदस्यता के समाप्त होने के बाद ही संगठन का चुनाव होता है। इसमें भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष से लेकर बूथ अध्यक्ष तक का चुनाव शामिल है। यह बसंत पर्व जैसा माहौल होता है।

फोटो: सुमित कुमार

फोटो :4 पीएम

खरीदारी लखनऊ। दीपावली के पूर्व स्टालों पर बिक रहे लक्ष्मी गणेश की मूर्तियां और मिट्टी के दीये लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। जबकि बर्तन बाजार में रौनक देखने को मिल रही है। लोग जमकर खरीदारी कर रहे हैं।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।